संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : ६ ● ०१ मार्च, २०१६ फाल्गुन कृष्ण सप्तमी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य समाज के कर्मयोगी संत आचार्य बलदेव जी महाराज

यह भारत भूमि प्राचीन काल से ही ऋषि - मुनियों तपस्वियों साधु संतों, वीरों, वीरांग्नाओं, पुण्यात्माओं, विद्वानों, दार्शनिकों, चिन्तकों, परोपकारियों, समाज सुधारकों, ज्ञानियों, सदाचारियों, राष्ट्र-भक्तों, धार्मिकों गो-भक्तों एंव ईश-भक्तों की भूमि रही है। समय समय पर भारत की पुनीत वसुन्धरा पर अनेक महापुरुष जन्म लेकर अपने सदुपदेशों के द्वारा भटके हुये लोगों को एक नूतन जीवन देते रहे। चाहे वह स्वामी दयानन्द हो चाहे वह स्वमी श्रद्धानन्द हो चाहे स्वामी स्वतंत्रानन्द हो चाहे स्वामी सर्वानन्द हो चाहे स्वामी ओमानन्द हो चाहे स्वामी विवेकानन्द हो चाहे स्वामी त्यागानन्द हो चाहे स्वामी सर्वदानन्द एवं दर्शनानन्द हो। इसी प्रकार अनेक धर्मवीरों राष्ट्र भक्तों एवं विराग्नाओं ने भी अपनी जान की परवाह न कर धर्म एवं राष्ट्र की रक्षार्थ अपने को बलिदान कर दिया। जैसे - पं० लेखराम पं० गुरूदत्त लाला लाजपत राय नेता सुभाषचन्द्र बोस वीर भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लहरी, सुखदेव, खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर आजाद आदि अनेक वीरों ने भी धर्म एवं राष्ट्र की रक्षार्थ अपने को कुर्बान कर दिया। इसी श्रृंखला में शिरोमणि संत आचार्य बलदेव जी का नाम अग्रणी है। आज कौन नहीं जानता है कि आचार्य बलदेव जी का शिष्य स्वामी रामदेव सम्पूर्ण विश्व में वैदिक रूपी पताका फहरा रहे हैं। यदि स्वामी दयानन्द को प्रज्ञाचक्षु ब्रह्मऋषि स्वामी विराजानन्द दण्डी न मिले होते तो आज आर्य समाज को कौन जानता? यदि स्वामी रामदेव को आचार्य बलदेव जी न मिले होते तो आज स्वामी रामदेव को कौन जानता ?जिस प्रकार स्वामी विरजानन्द ने अपने शिष्य स्वामी दयानन्द को वैदिक शिक्षा देकर उन्हें एक महान् सुधारक एवं वेदों का अद्वितीय विद्वान बनाया। उसी प्रकार आचार्य वसदेव जी ने भी स्वामी विरजानन्द बनकर स्वामी रामदेव को विद्वान एवं योगगुरू बनाया। यदि हम आचार्य बलदेव जी को द्वितीय स्वामी विरजानन्द माने तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। वास्तव में यह सत्य है कि आचार्य बलदेव जी द्वितीय विरजानन्द थे। जिन्होंने अपने वैदिक धर्म की रक्षा एवं वेदों की रक्षार्थ स्वामी रामदेव जैसे अनेक शिष्यों को तैयार कर समाज को समर्पित किया।

आचार्य बलदेव जी का जन्म २५ अक्टूबर सन् १६३२ ई० को हरियाणा प्रान्त के सोनीपत जिले के सरगथल नामक गांव में गूगन सिंह के घर हुआ। बचपन से ही उनका जीवन सादगी एवं उच्च विचारों से परिपूर्ण था। उन्होंने जाट कॉलेज रोहतक से एफ०एस०सी० तक की शिक्षा प्राप्त की। तदुपरान्त स्वामी ओ३मानन्द जी सरस्वती के सानिध्य में रहकर सन् १६६२-१६७१ तक गुरूकुल झंज्जर में रहते हुये अष्टाध्यायी प्राचीन व्याकरण महाभारत दर्शनों एवं वेदों का सागेंपांग अध्ययन करते हुये अपने को एक अच्छा विद्वान बनाने में समर्थ हुये तथा बाद में १६७१ से २००० तक गुरूकुल काल में रहकर श्रद्धापूर्वक कार्य एवं अध्यापन कार्य करते हुये अनेक ब्रह्मचारियों को वेदों एवं व्याकरण का विद्वान बनाया। जैसे - आचार्य ऋषिपाल, आचार्य स्वदेश, आचार्य महीपाल, आचार्य अर्जुनदेव आदि।

आचार्य बलदेव जी आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक के कई बार प्रधान पद पर रहे और कुछ दिनों तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान पद को भी सुशोभित किया।

आचार्य बलदेव जी आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासियों में अद्वितीय थे। आचार्या जी वेदों, व्याकरण महाभाष्य के अध्ययन करने के पश्चात् अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों की रक्षार्थ आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया। आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए उन्हें कभी भूखे भी रहना पड़ता था तो वह रह जाते थे। वह हमेशा कहा करते थे कि जिस स्वामी दयानन्द ने अपना घर परिवार एवं गांव छोड़कर वेदों की रक्षा के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ऐसे महान संन्यासी के द्वारा स्थापित आर्य समाज की रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। यदि हम लोग ऐसा नहीं करते हैं तो हम धर्म विरोधी है।

स्वामी दयानन्द की तरह आचार्य बलदेव जी ने भी अपना सम्पूर्ण परिवार घर जमीन आदि सभी को त्यागकर अपने जीवन को आर्य समाज की रक्षा में लगा दिया और सभी आर्य जनों से कहा कि आर्य समाज हमारी मां है। इसकी रक्षा करना हमारा परम दायित्व है।

आचार्य बलदेव जी गौ भक्त थे। उन्होंने गौओं की रक्षा पर विशेष बल दिया। उनकी रक्षा के लिये आचार्य गौर रक्षा आंदोलन भी चलाया और उनके समक्ष सरकार को झुकना पड़ा वह सबसे कहा करते थे कि जो मनुष्य गौओं की रक्षा नही करता है। उसे संसार में रहने का कोई अधिकार नही।

४. गौ माता हमारी संस्कृति की पहचान है। शास्त्रों में वर्णित है कि जो व्यक्ति गौओं की रक्षा नही करते है और अपने स्वार्थ सिद्धि करने के लिये गौओं की हत्या कर उनके मांस से अपनी भूख मिटाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को शीशे की गोलियों से उड़ा देना चाहिये अर्थात् मार देना चाहिये। जैसा कि वेदों में वर्णित है।

आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल था। वह प्रातः चार बजे उठकर पहले ईश का ध्यान करते थे। तदुपरान्त दैनिक दिनचर्या से निवृत्त होने के पश्चात स्नानादि कर संध्या यज्ञ हवन आदि करते थे। तत्पश्चात् वेदों का स्वाध्याय करना उनका नित्य का कार्य था। वह सुबह शाम कम से कम दो घंटे अवश्य ही घूमते थे। अर्थात भ्रमण करते थे।

वह आर्य समाज के महान् व्यक्तित्व थे। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं ऋषि पर दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिये कई जगहों पर आर्य समाज, गुरूकुल तथा गौशालाओं की स्थापना की। कई बार गौशालाओं के प्रधान पद एवं संरक्षक पद पर भी रहे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया। वह आर्य समाज के स्तम्भ थे। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग एवं पवित्रता से परिपूर्ण था। उन्होंने अपने जीवन में हिम्मत कभी भी नहीं हारी। वह हमेशा सबसे कहा करते थे कि जो मनुष्य अपना कल्याण चाहता है वह वेदों के सिद्धान्तों को अपने जवीन में उतारकर उन पर चलने का प्रयास करे। वह जिस भी कार्य को करते थे। बड़ी सूझ-बूझ के साथ करते थे। वह जहां जाते थे वहां कहा करते थे कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। जो मनुष्य वेदों के पथ पर चलता है। उसका कल्याण हो जाता है। जो मनुष्य वेद विरूद्ध आचरण करता है। वह मनुष्य नही बल्कि पशु माना जाता है।

५. निजिकार ने लिखा है-

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुर्णो धर्मः।
ते मर्त्यलोके भूखिमार भूताः मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।

अर्थात जिस मनुष्य में न विद्या है न तप है, न ज्ञान है, न शील है न गुण और न धर्म है। ऐसे मनुष्य इस मृत लोक पर भार रूप में हिरण के समान केवल विचरण कर रहे हैं। ये सभी गुण

शेष पृष्ठ.....८

वेदामृतम्

सुक्षेत्रिया सुगातुया, वसूया चयजामहे।
अप नः शोशुचदघम्।। ऋग् १.६८.२

हे शुचि अग्नि प्रभु! (सुक्षेत्रिया) उत्तम क्षेत्र की इच्छा से (सुगातुया) उत्तम मार्ग की इच्छा से (वसूया च) और निवासक ऐश्वर्य की इच्छा से (यजामहे) हिम आपकी पूजा करते है। (आप) (नः) हमारे (अघं) पाप को (अप शोशुचत्) सुखाकर नष्ट कर दीजिए।

हे शुचि अग्निदेव ! हे तेजस्विता के पवित्र पुज्ज परमप्रभु परमात्मन्! हम किसलिए आपका स्तुति-पूजन करते हैं, किसलिए भक्ति का नैवेद्य लेकर आपकी सेवा में उपस्थित होते हैं ?कोई हल्का-फुल्का-सा उद्देश्य लेकर हम आपकी आराधना नहीं करते, किन्तु महान् लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपका यजन करते हैं। सर्वप्रथम हम उत्तम क्षेत्र की इच्छा से आपकी पूजा करते हैं। क्षेत्र शरीर का नाम हैं। क्योंकि मानव-शरीर सब शरीरों में उत्कृष्ट है, अतः आगामी जन्मों में भी मानव-शरीर पाने के लिए हम आपकी अर्चना करते हैं, जिससे हम अणिमा, लघिमा प्रभृति विविध सिद्धियों को तथा मुक्ति को अधिगत कर कसें। क्षेत्र का दूसरा अर्थ कार्यक्षेत्र भी है। हम इसलिए भी आपका आराधना करते हैं कि हमें कार्य करने के लिए जीवन में उत्तम कार्यक्षेत्र प्राप्त हो, क्योंकि जब तक कार्यक्षेत्र उत्तम नहीं मिलता, तब तक मनुष्य अपनी योग्यता का प्रदर्शन नहीं कर पाता और न ही सत्फल प्राप्त कर सकता है। अनेक महत्त्वाकांक्षी जन शक्ति रखते हुए भी केवल उत्तम कार्यक्षेत्र न मिलने के कारण ही जीवन में सफल नहीं माने जाते। दूसरी वस्तु जो हम आपकी अर्चना करते हुए आपसे पाना चाहते हैं वह है सुगातु अर्थात् उत्तम मार्ग। हम उत्तम शरीर-रूपी क्षेत्र या उत्तम कर्मक्षेत्र को पा भी लें, किन्तु हमें चलने के लिए उत्तम मार्ग प्राप्त नहीं होता तो हम पैर होते हुए भी पंगु हैं। अतः हम इस निमित्त से भी आपकी पूजा करते हैं कि हमारे मन में आप प्रेरणा करें कि हमें जीवन में किस मार्ग से चलना चाहिए, जिससे हम निर्धारित लक्ष्य पर पहुँच सकें। तीसरी वस्तु है 'वसु' जिसे हम आपके अर्चन-पूजन द्वारा अधिगत करना चाहते हैं। वसु का अर्थ है निवासप्रद ऐश्वर्य, अर्थात् ऐसा ऐश्वर्य जिसे पाकर हम बसें, उजड़ें नहीं। वसु में आध्यात्मिक ऐश्वर्य और भौतिक ऐश्वर्य दोनों समाविष्ट हैं। हम अपने - अपने लक्ष्य के अनुसार अष्टांग योग के अभ्यास द्वारा उच्च से उच्च आध्यात्मिक ऐश्वर्य को अथवा सन्मार्ग से अर्जित उत्कृष्ट लौकिक धन-सम्पत्ति को प्राप्त करें।

हे देव ! आपके सम्मुख झोली पसारते हुए हम अन्तिम याचना यह करते हैं कि आप हमारे समस्त पापों को भस्म कर हमें पावन बना दीजिये। हम आपको अपने हृदय मन्दिर में आसीन कर आपकी आरती उतार रहे हैं, आपकी अर्चना कर रहे हैं।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

जवाहर लाल नेहरु विश्व विद्यालय देहली में उपजते देशद्रोही तत्वों पर विश्वविद्यालय प्रशासन पूर्ण अंकुश लगाये।

विगत दिनों जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय देहली में आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में वहां कतिपय छात्रों ने देश विरोधी नारे लगाने का भयंकर अपराध किया। ऐसे देश विरोधी कार्यों पर पूर्ण अंकुश लगाने के लिए विश्व विद्यालय प्रशासन और सरकार का गम्भीर दायित्व है परन्तु उनके पक्ष में राहुल गांधी और केजरीवाल मैदान में उनके पक्ष में कूद पड़े विश्व विद्यालय प्रशासन के एक प्रवक्ता के टेलीविजन पर जो वक्तव्य आ रहे हैं उससे अराजक तत्वों को बल मिल रहा है। यह अत्यन्त चिन्तनीय है।

मुझे शंका है वहां नक्सली तत्व उत्पन्न हो रहे हैं जिन पर विश्व विद्यालय प्रशासन अंकुश लगाने में संकोच कर रहा है या डर रहा है। नक्सली तत्व केवल अराजकता के ही उत्पादक होते हैं। उसपर सभी प्रदेशीय व केन्द्र सरकार को पूर्ण नियंत्रण रखने के लिए संगठित रूप में चिन्तन करने की आवश्यकता है।

जो भी छात्र देशद्रोही नारे बाजी करने में गिरफ्तार किये गये हैं उनपर विशेष न्यायालय का गठन करके अविलम्ब कार्यवाही करके उन्हें कठोर से कठोर दण्ड देने की व्यवस्था हो। साथ ही सी.आई.डी. तंत्र गम्भीर होकर विश्व विद्यालय में उत्पन्न होने वाले ऐसे तत्वों का अविलम्ब खुलासा करके उनपर नियंत्रण करने का मार्ग प्रशस्त करें।

आज हमारे देश की न्याय व्यवस्था इतनी जटिल है कि घटनाओं के घटने के बाद उनपर दीर्घ काल तक कोई निर्णय नहीं हो पाता। इतना विलम्ब लगता है कि घटना का स्वरूप धूमिल हो जाता है और कोई निर्दोष दण्डित न हो जाये इस भावना से दोषी प्रायः दण्ड के भागी नहीं बनते। साक्ष्य के अभाव में बहुत से छूट जाते हैं। ऐसे अपराधों की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए देश के सभी न्यायाधीशों को गम्भीर चिन्तन करना चाहिए। सभी विवादों को अतिशीघ्र निबटाने और दोशियों को दण्डित कराने के लिए संविधान में यदि कुछ संशोधन की अपेक्षा हो तो केन्द्र सरकार को न्यायालय संशोधन का सुझाव दे और केन्द्र सरकार लोकसभा में उसमें संशोधन का प्रस्ताव लाये और सभी राजनेता निःस्वार्थ भाव से उस संशोधन पर विचार मन्थन करके उसे पास करायें ताकि उसके अनुपालन से न्याय व्यवस्था सुदृढ़ हो और अराजक तत्व अपना सिर उठाने में घबरायें और हमारा राष्ट्र सुगठित, सुसमृद्ध होकर सारे विश्व में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में समर्थ हो।

-सम्पादक

आर्य समाज बरदहा का उत्सव

आर्य समाज बरदहा बहराइच का ५६वां वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी बड़े ही हर्षोल्लास के साथ स्थानीय आर्य समाज के प्रांगण में १२ से १५ मार्च, २०१६ तक मनाया जायेगा। जिसमें आर्य जगत के प्रख्यात उपदेशक स्वामी शिवानन्द दिल्ली संजीव रूप बदायूँ, विमल देव अग्निहोत्रि बरेली के भजन एवं उपदेश होंगे। कार्यक्रम प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक एवं दोपहर २ बजे से ४ बजे तक सायं ७ से १० बजे तक तीन पाली में चलेगा।

वासन्ती होली - नवशस्येष्टि
कृपया होली सादगी के साथ मनावें!

आचार्य रामज्ञानी आर्य (शिक्षक एवं उपदेशक)

भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। इस हमारे देश की यही विशेषता रही है कि यहां छः ऋतुएं होती है। संसार के किसी भी देश में छः ऋतुएं नहीं होती। सर्दी, गर्मी और वर्षा तीन ही ऋतुएं संसार में पाई जाती है। फिर भी सर्दी, गर्मी की सन्धि में वसन्तोंत्सव प्रायः सभी देशों में किसी न किसी प्रकार मनाया जाता है। यह खुशी का त्यौहार होता है। हमारे देश में अभी वसन्तपंचमी का त्यौहार मना कर ऋतुराज का स्वागत किया था। प्रकृति की छटा में काफी परिवर्तन आ गया है। वसन्त अपने पूर्ण यौवन पर है। प्रकृति ने धरती पर नव पल्लवों नव विकसित कुसुमों की बहार बिखरे दी है। चारों ओर प्रफुल्लता का वातावरण नृत्य कर रहा है। वन उपवन नगर ग्रामों में नव जीवन संचार हो रहा है। वृक्षों ने पुराने पल्लव झाड़ना प्रारम्भ कर दिये। नव कोमल कलिकायें प्रकट होने लगी। पक्षियों ने भी पुराने पर त्याग नवीन पर ग्रहण किये। पशुओं ने पुरानी रोमावली त्याग कर नवीन रोमावली का चित्र विचित्र परिधान ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया है। मानव जीवन में भी एक नया उल्लास बिखरने लगा है। एक शब्द में यदि कहे कि सारी प्रकृति ने ही अथवा पुराना चोला त्याग कर नवीन चोला ग्रहण कर लिया है और समस्त वातावरण में नव-जीवन संचार हुआ है। फाल्गुन पूर्णिमा के अवसर पर प्राचीन आर्यो का एक मुख्य पर्व वासन्ती-होली-नवशस्येष्टि के रूप में अनादि वैदिक काल से मनाया जाता रहा है। इसे वासन्ती होली होलक होला होलिका थी कहते है। यह पर्व भी शारदीय नवशस्येष्टि (दीपावली) की भांति अति प्राचीन वैदिक कालीन वसन्त ऋतु में मुख्य गेहूँ, जौ, चना आदि उपज को यज्ञ में अर्पित करके ग्रहण करने का एक विशेष पर्व है। संस्कृत भाषा का होलक जिसे आज कल होला कहते है। अर्थ अधपका भुना हुआ अन्न है। तृणानिभृष्टाद्धि पश्च - क्षयाधान्यै होलक होला इतिभाषा (शक कल्पद्रम कोष) इसी प्रकार भाव प्रकाश में लिखा है कि अधिपक्व शसीन्यैस्तृणा भृष्टैश्च होलकः अर्थात तिनको की अग्नि से भुने हुए अधपके शमीधान्य फल वाले अन्न की बाली को होलक कहते है। इससे स्पष्ट है कि होलका से होलीकोत्सव अथवा होला से होली नाम नव-सस्येष्टि का ही बिगड़ा रूप है। इस लिए होलिका के नाम से कण्डा लकड़ी तृण, घास आदि जला जला कर उसमें जब की नवीन बाली अधभुनी कर होला बनाते और उसी का प्रसाद ग्रहण करते हैं। नवशस्येष्टि यज्ञ ग्रामों में बड़े विशाल रूप से सामुहिक रूप से होता था। और उसमें नवान्न का होला बनाकर सर्व प्रथम उसका आमोद-प्रमोद खुशी का उत्सव मनाते और वसन्ती रंग द्वारा एक दूसरे को रंगकर शिष्टता सभ्यता पूर्वक सभी मत भेद भूलाकर एक दूसरे को गले मिलते थे और संगीत द्वारा इसे प्रदर्शित करते थे। किन्तु पुराणकारों ने इस राष्ट्रीय नवशस्येष्टि होली का पर्व के नाम पर एक कथा हिरण्यकशिपु की कथित बहिन ''होलिका'' की गोद में प्रहलाद को बिठाकर अग्निदाह करा दिया। जिससे होलिका जल गई ओर प्रहलाद बच गये। उसी आग को देखकर भक्तो ने धूलफैंक कर बुझा दिया और भक्त प्रहलाद भगवान का कीर्तन करते हुए बाहर निकले। यह कथा पदम् पुराण में पाई जाती है। इस पौराणिक भक्तों को पुछे कि उक्तनास्तिक राक्षस हिरण्यकशिपु कि बहिन जो जन गई और प्रहलाद भक्त को जलाना चाहती है, तो उसे ही होलीका माता कि जय कह कर आप नास्तिक राक्षस राज हिरण्यकशिपु के ही अनुयायी और उसे दल के ही सिद्ध नहीं होते इससे तो अधिक उपयुक्त और उचित था। दूसरी ओर राक्षसी होलिका के जल जाने पर राक्षसों ने भक्त प्रहलाद और उसके आस्तिक देवताओं को गालीयां दी थी। और वही गालीया अथवा कबीर से बोलना यह राक्षसों कृत्य नहीं तो क्या है ?आज यज्ञ वेदी पर कूड़ा कर्कट, गन्दगी तथा चोरी से लाया जलाकर दुर्गन्ध पैदा कर देना, उसी में जौ की बाले भूनना कहां की बुद्धिमत्ता है ? दूसरे दिन धुलहरी के नाम पर धूल, मिट्टी किचड़ कोलतार अथवा सड़े नाबदान का मल-मूत्र लेकर वीभत्स रंगों द्वारा मुखौटा रंगना कपड़ों को बरबाद करना इस कृत्य का होलिका पर्व से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस अवसर पर भाँग, शराब, गाँजा अथवा अन्य नशे में धुत हो, माँ-बहिन, भावज आदि - आदि का कभी-कभी गाली, अश्लील बकना इसे खुशी वा होली का प्रदर्शन नहीं कहा जा सकता है। यह सब पुराणों की देन है। भविष्येतर पुराण में इस उक्त प्रकार निर्लज्जता से होली मनाने का वर्णन विस्तार से पाया जाता है वहां लिखा है कि ''गालिदान तथा हास्य ललनवानर्तमुटम''। अर्थात गाली देना हंसना, बकवास लड़कीयों का नाच मनमाने वेष बनाकर वेश्याओं का नाच अपनी इच्छानुसार निःशंक होकर करना इस प्रकार इस पर्व का वर्तमान कुत्सित रूप अत्यन्त बिगड़ा रूप जो आज समस्त देश में प्रचलित है। यह पुराण अथवा पौराणिक अन्ध-विश्वास की देन है। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक स्थानों पर प्रतिवर्ष झगड़े हो जाते है। चलती हुई रेल, मोटरों में ईटे पत्थर मिट्टी फेकना यह सब कुछ होलिका पर्व का अंग नहीं हो सकता है। सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि किसी सामाजिक बुराई पर यदि धर्म और नैतिकता की मुहर लगा दी जाये उस अवस्था में उसे दूर करना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में वैदिक आर्यो द्वारा होली आर्य पर्व पद्धति के अनुसार करके शिष्टता, सभ्यता पूर्वक बसन्ती रंग का प्रयोग कुछ अनुचित नहीं कहा जा सकता तथा मनोरंजन के लिये धर्म पूर्वक बड़े-बड़े सम्मेलन करने शिष्टता पूर्वक प्रसन्नता भी व्यक्त की जा सकती है। आइये! हम लोग होली शिष्टता पूर्वक और सभ्यता पूर्वक एक दूसरे गले मिलते हुए, पुराने पतझड़ के सदृश वैर वैभनस्य भाव मिटाकर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना जागृत करें। आज के दूषित वातावरण में हमें गम्भीरता पूर्वक इन सब पर विचार करना चाहिए। और आपको इस अवैदिक दूषित पद्धति में परिवर्तन करना चाहिए।

आर्ष परम्परा के पोषक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

आर्य परम्परा के पोषक, शुद्धि आन्दोलन के संवाहक गुरू परम्परा के संचालक, नैष्ठिक ब्रह्मचर्य दीक्षा के संवर्द्धक धर्मरक्षा अभियान के पुरोधा वनवासी क्षेत्र के वेद उद्घोषक, संस्कृति-संस्कृत के परिषेक्ता, आयुर्वेद रक्षक, गोमाता की सेवा में समर्पित देवदयानन्द के स्वप्न को साकार करने के लिए संकल्पकर्त्ता, अनुपम गुरूवार के प्रियतम शिष्य, उड़ीसा प्रान्त की पहिचान, हरयाणा के धीर शिरोमणि आर्यरत्न सम्मान से विभूषित, काषाय वस्त्रों में सुशोभित स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आर्य समाज के सन्यासि श्रेष्ठतम हैं जो सदैव भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा श्रोत के रूप में स्मरण किये जायेगें। आपकी भव्यता आपकी दिव्यता, आपकी सौम्यता और सरलता सादगी, सच्चाई, सच्चरित्रता, निष्ठा और पुरुषार्थ- ही संकल्प के साथ आपके उदात्त जीवन की विशेषता है। आर्य परम्परा को सवंर्द्धित करने के लिए आपने गुरूकुलों का जाल उड़ीसा-छत्तीसगढ़, नागलैण्ड में फैलाया है। मुझे आपके प्रति विशेष श्रृद्धा इसलिए है कि आपने बंजरभूमि ऊसर क्षेत्र में वेदोधान लगाकर उन्हें पुष्पिन और पल्लवित किया है। साधनों एवं सुख सुविधाओं में तो कोई भी कार्य द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त कर सकता है तथा कर भी रहे हैं लेकिन जहां न खाने की सुविधा न सवारी की सुविधा और न कोई आर्थिक रूप से सहयोग ही मिला हो वहां जाकर उन लोगों का मुकाबला करना जो विदेशी अनुदान से रूपमा पानी की तरह ब्रह्मकर भोली भाली आर्य जाति को ईसाई बनाने का षड्यन्त्र का रहे थे जो रोटी-बेटी के बदले में चोटी को कटवा रहे थे ईसाई मिश्नरी की योजना को फेल करके तथा जो ईसाई बन गए थे उन्हें पुनः शुद्ध करके आपने अपनी प्रतिज्ञा का पूरा किया है और सच्चे महर्षि दयानन्द के सेनानी बनने का गौरव प्राप्त किया हे तभी तो आपको आर्यरन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आपने सन्यास दीक्षा के समय जो संकल्प लिया था कि मुझे दयानन्द की फौज के लिए कमाण्डर तैयार करने हैं जो फौज पर अनुशासन कर सके और गुरूकुलीय आर्य परम्परा को संवार्द्धित करते हुए सतत संचालित कर सकें, उसके लिए नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा देकर आजीवन ब्रह्मचारियों का संगठन तैयार किया यह इनकी दूरदर्शिता का साक्षात् प्रमाण है जो कालवा के अतिरिक्त अन्याय कम दिखाई देता है अथवा स्वामी प्रणवानन्द जी गुरूकुल गौतम नगर दिल्ली वालों के नियम बनाया है कि न्यास द्वारा संचालित गुरूकुलों के आचार्य ब्रह्मचारी - वानप्रस्थी अथवा सन्यासी ही रहेंगे गृहस्थी नहीं यह नियम एक ऐसा सम्बल है जो आर्य परम्परा को संजीवनी प्रदान करेगा। जो स्वार्णिम अध्याय के रूप में याद किया जायेगा।

मेरा स्वामी जी से बहुत पुराना परिचय है जब मैं धर्म देवजी व्रती के नाम से गुरूकुल झंज्जर के मुख्याधिष्ठाता के रूप में कार्य कर रहे थे आपका स्वभाव बड़ा नम्र व उदार था पूज्य गुरूवर स्वामी ओमानन्द जी महाराज तब तपोधन आचार्य भगवान् देव जी के नाम से विख्यात थे स्वर्ण जयन्ती के पश्चात् गुरूकुल ततारपुर से ५ ब्र० व्यायाम शिक्षणार्थ आये थे तब यहाँ हमारा मन लगाने का कार्य आपने ही किया था क्योंकि उस समय गुरूकुल में नमक-मीठा रहित भोजन करना पड़ता था जो हमारे लिए कठिन परीक्षा थी तब व्रती जी ने कृपा करके हमारे लिए दलिया हेतु मीठा तथा नमक के लिए नियम बनाया था। उसी समय से आपका स्नेह आत्मीयता तथा आशीर्वाद प्राप्त कर रहा हूँ। आप गुरूकुल की दिनचर्या एवं व्यवस्था हेतु अहर्निश पुरुषार्थ करते थे उसी समय के अभ्यास का परिणाम है कि आज कई संस्थायें चलाने में आपका उत्साह निरन्तर प्रगति की प्रेरणा प्रदान करता हुआ समाज सेवी के रूप में आपकी प्रतिष्ठा सर्वत्र सुनाई दे रही है आपके प्रति आर्यजगत् श्रद्धा से नमन करके सौभाग्य अनुभव का रहा है। आपका जन्म हरयाणा प्रान्त के रोहतक जिले के हिमायूंपुर ग्राम में चौ० जुगलाल जी के घर पर सन् १९४० ई० में हुआ तभी से आप क्रमशः अपनी प्रतिभा से लोगों के मन में स्थान बनाते रहे उत्तरोत्तर प्रगति से ग्राम में शिक्षा और संस्कारों से परिमार्जित हुए पूज्य स्वामी ओमनन्द जी के प्रवचन सुनकर गुरूकुल पढ़ने की रूचि पैदा हुई और गुरूकुल झंज्जर में आकर आजीवन ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर नैषिक ब्रह्मचारी बने यह आपके जीवन का स्वर्णिम काल था जो योग्यता आचार्य विद्वानों का सान्निध्य एवं आशीर्वाद लेकर विद्याव्रत स्नातक बनें जो व्रती के नाम से प्रसिद्ध हुए। सोने पर सुहाना कहावत को आपने चरितार्थ किया और अपने सर्वागीण विकास करने रहे गोरक्षा आन्दोलन में भी आपने भाग लेकर गोमाता की जय बोलने का सच्चा अधिकार प्राप्त कर लिया एक मास तक जेल में रहकर अपने मन और तन को कुन्दन बनाया श्रीमती स्व० इन्दिरागांधी जी का प्रधानमंत्री काल था वर्ष १९६६ - ६७ में आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया हुआ था प्रत्येक आर्य संस्था वाले इस आन्दोलन में भाग लेने में सौभाग्य अनुभव कर रहे थे। मुझे भी वाल्यकाल में यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था गुरूकुल की सारी व्यवस्थाओं से आपने गुरूवर पूज्य स्वामी ओमनन्द जी को निश्चिन्त कर दिया था आपकी साधना से हृदय करूणा का सागर बन चुका था मन में भावनाओं का सागर उमड़ पड़ा और अपने देशों के देश हरयाणा जहां दूध-दही का खाना एक देशी रियासत को छोड़कर वैराग्य धारण करने का संकल्प ले लिया संकल्प भी था तो समाज सुधार का वेद प्रचार का विछुड़ों को गले लगाने का, कुरीतियों को मिटाने का और ऊसर (बंजर) में बाग लगाने का, उड़ीसा जैसे प्रान्त में वेद वाटिका लगाने का व्रत लेकर ३ ब्र० गुरूकुल से निकल पड़े ब्र० धर्म देव व्रतीजी, ब्र० दयानन्द जी, ब्र० सुरेन्द्र जी, गुरूकुल पानपोष, राऊरकेला को केन्द्र बनाकर कार्य प्रारम्भ किया और दिन रात धूम मचाते हुए आगे बढ़े जैसे भगवान् रामचन्द्र जी अपने अयोध्या के राज्य को छोड़कर इस क्षेत्र में आये थे और यज्ञ की रक्षा तथा राक्षसों का विध्वंस करके रामराज्य की स्थापना की थी ठीक उसी प्रकार आपके यज्ञ की रक्षा और आसुरी वृत्तियों को नष्ट करने का संकल्प लिया जैसे उन्होंने वहीं से अपनी सेना तैयार की थी उसी प्रकार उसी क्षेत्र के लोगों के बीच रहकर उन्हें वैदिक विद्वान बनाकर वेद प्रचार - गुरूकुल स्थापना और गौशालाओं का संचालन, आयुर्वेद - योग द्वारा स्वास्थ्य लाभ देना प्रारम्भ किया साथ ही गरीबों को वस्त्र दान- भोजन देकर विधर्मी बने लोगों को आर्य बनाने का अभियान प्रारम्भ किया वहां की परेशानी देखकर दोनों साथी वापस आ गए लेकिन आपने महाराजा मर्तृहरी के वाक्य को सार्थक किया - प्रारम्भ विघ्नैः पुनः पुनःप्रति हन्यमाना उत्तम जनाः न परित्यजन्ति अर्थात् अधम कोटि के लोग तो विध्नमय से कार्य प्रारम्भ ही नहीं करते, मध्यम कोटि के लोग बीच में छोड़ देते हैं लेकिन कितने ही विघ्न आयें उत्तम कोटि के लोग कार्य की पूर्ण ताकत ही विश्राम करते हैं। पिछले दिनों मुझे गुरूकुल आमसेना के वर्षिक सम्मेलन पर जाने का अवसर मिला वहां वक्ताओं ने जो सुनाया और जानकारी से विदित हुआ कि प्रारम्भ में आप जब आये थे तो आपका संकल्प कितना बलवान् था इससे पता चलता है कि थोड़े से चावलों में पानी डालकर पकाना और मॉड सहित नमक डालकर उदर पूर्ति करना ही लक्ष्य बनाया था दाल या सब्जी खाने को उपलब्ध नहीं थी आपकी तपस्या उस समय महर्षि दयानन्द जी की गंगा किनारे की तपस्या को याद लिा रही थी लेकिन उद्देश्य महान था समाजसेवी लोगों ने तरह-तरह से कमजोर करना चाहा, ईसाई मिश्नरियों ने धमकियां दी कि इस क्षेत्र को छोड़कर चले जाओ जीवन का खतरा मोल न लो लेकिन जो क्रान्तिकारियों की तरह सर पर कफन बांधकर गए थे उन्हें क्या डरना चौवेति-चौवेति को सार्थक कर रहे थे जैसे तपस्या का प्रभाव भलीभूत होता है वैसे ही आपकी साधना -संयम सेवा - स्वाध्याय - सहनशीलता रूपी तपस्या सफल हो गई जब ईश्वर की प्ररेणा से हरयाणा के गौरव श्वेत वस्त्रों के सन्यासी चौधरी मित्रसेन जी को आपकी तपस्या का परिज्ञान हुआ और वे दानवीर मामाशाह के रूप में प्रकट होकर कहने लगे कि आप महाराणा प्रताप बनकर अपनी सेना तैयार करो धन की पूर्ति मैं करता रहूँगा जैसे कहते हैं अन्धे को आंखे मिल गई लंगड़े को लाठी टांगे मिल गई मुर्दो में जान आ गई मूर्च्छित हनुमान को संजीवनी औषधि मिल गई वैसे ही स्वामी जी की तपस्या भी फलवती हो गई उस दिन से लेकर आज तक आपको हर प्रकार का सहयोग मिल रहा है और आपका अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा निरन्तर दौड़ रहा है उसे कोई रोकने वाला नहीं है लवकुश के रूप में २ ब्र० ने घोड़ा रोकने का प्रयास भी किया लेकिन वे भी पुनः सहयोगी बने हैं। आपके प्रभाव से आबाल वृद्ध सदैव सर्वत्र मात्र दर्शन करके - नाम सुनकर चरणों की ओर आशीर्वाद लेने के लिए झुक जाते हैं। आज आपके पास विपुल सेना है विपुल साधन हैं मन में उत्साह है और आन्दोलन अभियान निरन्तर प्रगति कर रहा है १९८० से लगातार ३६ वर्षो में जनसेवा गरीबों को वस्त्र बाँटना दवाई देना अन्न-चावल बाँटना चलता रहता है लातूर के भूकम्प समय पर एक ट्रक चावल दाल - वस्त्रों द्वारा सेवा की थी। इसी प्रकार सदैव आपके द्वार सबके लिए खुले रहते हैं। धर्मार्थ चिकित्सा सेवा भी स्वामी व्रतानन्द जी द्वारा गुरूकुल के माध्यम से चलती रहती है। उसकी पूर्ति हेतु रसायनशाला भी चल रही है। एम्बुलैंस सेवा भी उपलब्ध है। निर्धन आदिवासी बालकों की शिक्षा के लिए १८ शिक्षण संस्था एवं आश्रम संचालित हैं इसी सेवा से आपको सर्वत्र सम्मान प्राप्त हो रहा है कुछ लोग पुरस्कार एवं सम्मान पत्र भी देकर सौभाग्यशाली बन रहे हैं। मैं भी वाणी के माध्यम से लेखनी के माध्यम से आपके वार्षिक सम्मेलन पर आर्य प्रतिनिधित सभा उ०प्र० एवं गुरूकुल परिवार की ओर से आपकी दीर्घायु एवं अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हुआ आपसे आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.
संचालक-गुरूकुल पूठ, हापुड़

शिवभक्त चेतें! क्या शिवरात्रि का शिव शंकर नहीं ?

यह ब्रह्मण्ड बड़ा विशाल है। इस विशाल ब्रह्मण्ड का शासक, प्रशासक, प्रकाशक, रक्षक, धारक, पालक, अविनाशक, संहारक आदि गुण, कर्म, स्वभाव वाला शिव-कल्याण कारक ब्रह्म, ओ३म् ईश्वर है। यह ब्राह्मण्ड का स्वामी, सर्व मंगलकारक, सुखदायक ईश्वर हस्तपाद, शिर, नयन, कर्ण, नासिका, मुख आदि आकारों वाला एवं पिण्डरूप नहीं है। वह तो ओ३म् पदवाच्य सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, निराकार, अजर, अमर, चेतन शिव- सुखदायक, शंकर - सुखकारक आदि स्वरूपमय है। यह वेद एवं वेदानुकूल शास्त्रों से सुप्रमाणित है। वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस स्वरूप को ही ब्रह्म से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियों ने जाना और माना है। आर्यसमाज के संस्थापक वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द ने भी ब्रह्मादि ऋषियों का ही अनुगमन किया है।

पर वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस सर्वव्यापक, शंकर-सुखकारक आदि स्वरूपों से बहुत से मतवादी सहमत नहीं है। उन असहमत मतवादियों में एक ब्रह्मकुमारी मत भी है। ब्रह्मकुमारी मत ईश्वर को सर्वव्यापी नहीं मानता, शंकर ईश्वर का ही विशेषण या नाम है, यह भी नहीं मानता। इस मत की बड़ी विचित्र धोखा देने वाली अवधारणाएँ हैं। मेरे समक्ष इस मत की शिव और शिवरात्रि, घोरकलहयुग विनाश पुस्तक एवं ओम शान्ति मीडिया समाचार पत्र सामने रखे हैं। जिनमें इनकी शिव ईश्वर सम्बन्धी अवधारणाएँ लिखी हुई हैं। यह मत वेदोक्त संस्कृति व धर्म का नाशक एवं तथाकथित हिन्दू धर्म की नींव खोदने वाला मत है। घोरकलहयुग विनाश पुस्तक के १२ वें पृष्ठ पर हिन्दू मतावलम्बियों को बुतपरस्त हिन्दू ऐसा सम्बोधन कर उन्हें धिक्कारा है। इस मत के आदि आरम्भक सिन्ध, करॉंची वासी लेखराज हैं। जिन्हें ब्रह्मकुमारी मत शिव का अवतार मानता है। लेखराज के अनुयायी रामायण को श्रीराम का जीवन चरित्र एवं गीता को कृष्ण का उपदेश नहीं मानते, अपितु रामायण को उपन्यास एवं गीता को लेखराज का उपदेश मानते हैं। इनके अनुसार शिव यहूदियों का यहोवा है एवं मुहम्मद का अल्लाह शिव है। शिव और शिवरात्रि पुस्तक के ३६ वें पृष्ठ पर पंक्ति है - परमात्मा के शिव नाम का ही एक रूपान्तर यहोवा है। .... और वह सर्वव्यापक नहीं है। इसी प्रकार पृ० ४२ पर पंक्ति है - मुहम्मद साहब ने शिव को ही अल्लाह नाम दिया था, हाँ! वे पूर्तिपूजा के विरूद्ध थे। इन पंक्तियों से सुस्पष्ट है कि यह ब्रह्मकुमारी मत ईसाई, मुसलमानों का छद्मवेशी मत है।

ईश्वर को सर्वव्यापक मानने पर इन्हें जो बाधा लगती है, वह शिव और शिवरात्रि एवं ओम शान्ति मीडिया के अनुसार यह है कि यदि कल्याणकारी शिव ईश्वर को सर्वव्यापक मानेंगे, तो सर्वव्यापक तत्व का कहीं आना जाना नहीं हो सकता, अतः उसे मन के समान तीव्र गति वाला भी नहीं कहा जा सकता। शिव को शंकर न मानने में इनका कथन है - शिव देवों के देव हैं और शंकर पुरी के निवासी एक देवता की मूर्त्ति है, शंकर शिव का पर्याय शब्द नहीं है। इस प्रकार लेखराज द्वारा चलाये गये इस मत की अनेक वेद एवं भारतीय संस्कृति के विरूद्ध मान्यताएँ हैं।

इस ब्रह्माकुमारी मत को ज्ञात हो कि ईश्वर के स्वरूप, कार्य आदि के ज्ञान में वेद एवं वेदानुकूल शास्त्र ही प्रमाणभूत हैं, अज्ञानी नहीं। अज्ञानी मतवादियों के कथन न प्रमाण योग्य होते हैं, न मानने योग्य। वेदादि में ईश्वर की सर्वव्यापकता के प्रतिपादक अनेकों मण्डल, काण्ड, अध्याय, अनुवाक, सूक्त, मन्त्र, मन्त्रचरण, वाक्य, वचन निर्दिष्ट हैं। उदाहरणरूपेण अथर्व मन्त्र है -

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश।

य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये।। अथर्व. ७/६१/१।।

अर्थात् यः= जो, रुद्रः= रुद्रयप कर्मानुसार फल द्वारा रुलाने वाला ईश्वर, अग्नौ= अग्नि में, यः= जो, अप्सु अन्तः= जलों के मध्य, यः= जो, वीरुधः= विविध शाखा एवं पत्र वाली, ओषधीः= धान, गेहूँ, कदली आदि ओषधियों में, आविवेश= प्रविष्ट है, यः= जिस ईश्वर ने, इमा विश्वा= इन सब, भुवनानि= लोकों को, चाक्लृपे= बनाया है, तस्मै= उस, अग्नये रुद्राय= अग्रणी, प्रेरक रुद्र ईश्वर के लिए, नमः अस्तु= स्तुतियाँ है, प्राथनायें हैं।

मन्त्र का भाव है, रुद्र ईश्वर जगत् के अग्नि, जल, ओषधि= धन धान्य, वृक्ष आदि पदार्थो में, लोक लोकान्तरों में व्याप्त है, सबसे अग्रगामी है। वह ही सबका उपास्य एवं प्रार्थ्य है।

ईश्वर की सर्वव्यापकता का निर्देशक यजुः मन्त्र है -

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।

तस्मिन्नदँ सं च वि चैति सर्वँ, स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु।। यजु. ३२/८।।

अर्थात् जो गुहा निहितम्= बुद्धि में स्थित है, यत्र= जिस ईश्वर में, विश्वम्= सम्पूर्ण जगत् एकनीडम्= एक आश्रय वाला है, तत्= उस, सत्=चेतन सत्ता को, वेनः= ज्ञानी, पश्यत्=ज्ञानचक्षु से देखता है, तस्मिन्= उसी ब्रह्म ईश्वर में, इदम् सर्वम्= यह सब जगत् सम् एति= प्रलय में संगत होता है, च= और, उत्पत्ति काल में पृथक् स्थूल रूप में विस्तृत च= भी होता है, सः= वह ब्रह्म ईश्वर, विभूः= व्यापक है, प्रजासु= समस्त जड़, चेतन में, ओतः च प्रोतः= वस्त्र के खड़े आड़े सूतों की भाँति ओत है और प्रोत है।

तात्पर्य स्पष्ट है कि परमात्मा, ब्रह्म, ईश्वर जगत् के जड़, चेतन, पदार्थो में व्यापक है, वस्त्र के सूत के सदृश सर्वत्र ओतप्रोत होने से सम्पूर्ण जगत् एक नीड है, एक आश्रय वाला है।

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

वेदों की सार उपनिषदों में ईश्वर की व्यापकता के अनेक स्रोत विद्यमान हैं। श्वेताश्वेतर उपनिषद में ईश्वर को सर्वव्यापी नाम से निर्दिष्ट कर परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान को परमब्रह्म उपनिषद् कहा है। वचन है -

सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरिवार्पितम्।

आत्मविद्यातपोमूलं तद्ब्रह्मोपनिषत्परं तद्ब्रह्मोपनिषत्परमिति।।

श्वेता० उप० १/१६।।

अर्थात् क्षीरे= दूध में, सर्पिः इव= घृत के सदृश, अर्पितम् = व्याप्त सर्वव्यापिनम्= चराचर में व्याप्त, आत्मानम्= ब्रह्म, ईश्वर का आत्मविद्या= आत्मज्ञान द्वारा, तपः= तप द्वारा मूलम्= मूल स्वरूप ज्ञात होता है अथवा परमात्मा का ज्ञान आत्मविद्या एवं तप, मूलम्= आधार वाला है। तत्= उस, ब्रह्म उपनिषद्= ब्रह्म का ज्ञान, उपासना ही, परम्= श्रेष्ठ है, अन्तिम स्थिति है, तद् ब्रह्म उपनिषत् परम्= वह ही परम ब्रह्म ज्ञान है।

वचन का तात्पर्य है सर्वव्यापी ब्रह्म दूध में घृत की भाँति सर्वत्र समाया हुआ है। उसकी प्राप्ति का मूल आधार आत्मविद्या एवं तप हैं। वह ब्रह्म ईश्वर उपनिषद् का परम रहस्य स्वरूप ज्ञान है।

मुण्डकोपनिषद् में ईश्वर को सर्वव्यापक निर्दिष्ट करते हुए कहा -

नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः।। मुण्ड०उप०१/६।।

अर्थात् नित्यम= सनातन, अजर, अमर, विभुम्= व्यापक, सर्वगतम्= सर्वत्र पहुँचा हुआ, सुसूक्ष्मम्= सूक्ष्मातिसूक्ष्म, तत्= वह ब्रह्म, अव्ययम्= अविनाशी, यद् भूतयोनिम्= जो चराचर भूतों का निमित्त कारण व आश्रय है, उसे, धीराः= ज्ञानी, ध्यानी, परि पश्यन्ति= देखते हैं, उसका साक्षात्कार करते हैं।

वचन का भाव है, ब्रह्म नित्य, व्यापक सब पदार्थो को प्राप्त, सूक्ष्म, अविनाशी है। उसमें ही सब भूत= उत्पन्न होने वाले पदार्थ रहते हैं। परा विद्या वाले ज्ञानी उसका साक्षात्कार करने में समर्थ होते हैं।

शिवपुराण आदि ग्रन्थों में भी ईश्वर को सर्वव्यापक बताया है। उदाहरणरूप वेद एवं उपनिषद् के इन प्रमाणों से सुस्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा ईश्वर सर्वव्यापक है। उसके सर्वव्यापक होने पर ईश्वर को कहीं आने जाने की आवश्यकता नहीं, वह तो सर्वव्यापक होने से स्वतः ही सर्वगत है, सर्वत्र ही पहुँचा हुआ है। वह मन के समान क्या ? मन से भी तीव्र गति वाला है। ईश्वर की मन से भी शीघ्र गति का निर्देश करते हुए वेद में कहा है -

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नु-वन्पूर्वमर्षत्।

यजु० ४०/४।।

अर्थात् एकम्= अद्वितीय ईश्वर, अनेजत्= गति नहीं करता, वह अचल है, परन्तु मनसः= मन के वेग से भी, जवीयः= अति वेगवान् है। और वह, पूर्वम् अर्षत्= पहले से ही सबसे आगे जहाँ कोई चलकर जाए, वहाँ व्याप्त हुआ होता है। देवाः= चक्षुः आदि इन्द्रियों, एनत्= इस देव ईश्वर को, न आप्नुवन्= प्राप्त नहीं करती।

तात्पर्य हुआ, ईश्वर सर्वव्यापक है, मन की गति से भी तीव्र गति वाला है, अचल है, अवतार एवं आने जाने की विधियों से रहित है। सम्पूर्ण जगत् में ठसाठस भरा है। उससे जगत् के तीनों लोको का कण कण व्याप्त होकर के सृष्टि का पालन, धारण, उत्पादन कर रहा है। सुख समृद्धि के साधनों को दे रहा है। ईश्वर यदि सर्वव्यापक न होता, तो वह सृष्टि के समस्त पदार्थो का अधिष्ठाता, आधार, क्रिया कर्म का साक्षी कैसे होता! एवं कर्मफल का दाता और न्यायकारी कैसे बनता! सुखों के साधनों को किस प्रकार देता! अतः है वह सर्वव्यापक है।

इस विशाल सृष्टि की जितनी भी धन धान्य, सोना चाँदी, समृद्धि सम्पत्ति आदि की सम्प्रदायें हैं, उनका आधार निराकार, सर्वव्यापक शिव=सुख का कारण, शंकर= सुखकारक ब्रह्म

शेष पृष्ठ.....५

पृष्ठ.....४ का शेष

ईश्वर ही तो है। सम्पदा का क्षेत्र भी छोटा नहीं है, अति विस्तृत है। पृथिवी को देखते ही सरस, नीरस, नाना प्रकारक, अननुमानित सम्पदा का आगार दीखता है, अन्तरिक्ष पर दृष्टि डालते ही वायु, विद्युत एवं उत्पत्ति के आधार जल आदि का बृहत् भण्डार दृष्टिगोचर होता है, द्यौलोक में दृष्टि पड़ते ही प्रकाश, दीप्ति के हेतु जाज्वल्यमान चाँद, सितारे, सूर्य, चन्द्र आदि बड़े बड़े प्रकाशपुञ्ज दीख पड़ते हैं।

सर्वव्यापक ईश्वर प्रदत्त इस सम्पदा से पहाड़ों को चीरकर लोग पति, धनपति बन रहे हैं, वृक्षों को कांट बेचकर नगरपति हो रहे हैं, जलों को बेचकर बड़े लखपति स्वामी कहे जा रहे हैं, फलों का लेन देन कर कोठीपति सिद्ध हो रहे हैं, लोहा, कोयला आदि को प्राप्त कर करोड़ पति बन रहे है, तेलों की खदानों से अरबपति, खरबपति बनते जा रहे हैं। यह सब निराकार शिव, शंकर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् अजर, ईश्वर की सम्पदा का ही कमाल है।

सर्वव्यापक शिव ईश्वर द्वारा दी गई सम्पूर्ण सम्पदा सर्वजनीन है, सबके लिए है। किसी एक व्यक्ति क्षेत्र, ग्राम, प्रान्त, प्रदेश, देश के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए यह सम्पदा है।

सम्पदाओं के स्वामी ओमभिधान शिव, शंकर ईश्वर की इस वरिमा, महिमा, उदारता, दयालुता को देख भक्ति भावों से नित्य सभी का मस्तक नम है। उन भक्ति भावों को व्यक्त करते हुए कोई भी थकता नहीं। उन भक्ति भावों का सूचक मन्त्र है -

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।
यजु० १६/४१।।

यजुर्वेद के इस मन्त्र में ३ बार नमः शब्द आया है। नमः शब्द २ प्रकार के हैं। जो णम प्रह्वत्वे शब्दे च धातु से असुन् एवं अच् प्रत्ययों द्वारा हलन्त, अजन्त क्रमशः नमस्, नमः शब्द रूप सिद्ध होते हैं। जिनके नमस्कार, सत्कार (नमस्यति परिचरणकर्मा, निघ० ३/५) वज्र, अन्न (नमः इति अन्न नाम, निघ. २/७, नमः इति वज्र नाम, निघ. २/२०), संगति, स्तुति (यज्ञो वै नमः, शत. ब्रा. २/४/२/२४) आदि अर्थ हैं। जिनका प्रकरणानुसार सम्बन्ध होता है। यहाँ प्रकृत मन्त्र में प्रसंगतः नमः शब्द के स्तुति अर्थ की संगति होगी।

इस यजुः मन्त्र में स्तुति के अधिकारी ईश्वर के लिए चतुर्थी विभक्त्यन्त शम्भवाय, मयोभवाय, शंकराय, मयस्कराय, शिवाय, शिवतराय ये ६ पद आये हैं। इन ६ पदो के माध्यम से उपासक द्वारा सुख, कल्याण के निमित्त उपास्य ईश्वर के प्रति हृदय के गम्भीर भाव अभिव्यक्त हैं।

मन्त्र में आये ये चतुर्थ्यन्त पद शम्, मयस्, शिव इन शब्दों से निष्पन्न हुए हैं। ये तीनों शब्द शम् इति सुख नाम, निघ० ३/६, मयः इति सुख नाम, निघ. ३/६, शिवम् इति सुख नाम, निघ. ३/६, सुख के वाचक हैं। आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन ३ भेदों से सुख भी ३ प्रकार का है। शम् शब्द वाच्य सुख आध्यत्मिक= मोक्ष का सुख है, मयस् शब्द वाच्य सुख आधिदैविक= देव, इन्द्रिय अर्थात् मन, प्राण, १० इन्द्रियों एवं आत्मा का सुख है। शिव शब्द वाच्य सुख आधिभौतिक= सांसारिक, धन धान्य, रूपया पैसा, सगे सम्बन्धी आदि का सुख है।

शम् तथा मयस् उपपद रहते अन्तर्भावितण्यर्थ में भू सत्तायाम् धातु से अच् प्रत्यय द्वारा शम्भव, मयोभव शब्द सिद्ध होते हैं। जिनका चतुर्थी में शम्भवाय, मयोभवाय रूप बनता है। जिनका अर्थ होता है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख उत्पन्न न करने वाले के लिए।

शम् तथा मयस् उपपद रहते डुकृज, करणे धातु से अच् प्रत्यय द्वारा शंकर, मयस्कर शब्द निष्पन्न होते हैं। जिनका चतुर्थी में शंकराय, मयस्कराय प्रयोगरूप बनता है। जिनका अर्थ है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख करने वाले के लिए।

इसी प्रकार शिव शब्द से अतिशय अर्थ में तरप् प्रत्यय करके शिवतर शब्द बनता है, पुनः चतुर्थी में शिवतराय प्रयोगरूप बना है। जिसका अर्थ है आधिभौतिक= सांसारिक सुख के अतिशय कारण के लिए। प्रकृति, सभी का कल्याण, सुख करती है अतः शिव है। ईश्वर भी सबका कल्याण, सुख करता है, किन्तु प्रकृति से अतिशय रूप में करता है, अतः वह शिवतर है।

इस प्रकार नमः शम्भवाय० इस मन्त्र का अर्थ हुआ -

हे ईश्वर! आप शम्भवाय= शम्- आध्यात्मिक मोक्ष सुख उत्पन्न करने वाले के लिए, च= और, मयोभवाय= आधिदैविक मन, इन्द्रियादि का सुख उत्पन्न करने वाले के लिए, नमः= स्तुति है, च= और, शंकराय= शम्= मोक्ष सुख को करने वाले के लिये, च= और मयस्कराय= मयस्- मन, इन्द्रिय आदि के सुख को करने वाले के लिए, नमः= स्तुति है, च = और, शिवाय= धन धान्य आदि मंगल सुख करने वालो के लिए, च= और, शिवतराय= अतिशय पूर्वोक्त मंगल, सुख स्वरूप के लिए, नमः= स्तुति है।

तात्पर्य हुआ उस अद्वितीय सत्ता के जैसे ओम्, ब्रह्म, ईश्वर आदि नाम हैं वैसे ही उस के शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर नाम हैं। वह ही मोक्ष आदि तीनों सुखों को उत्पन्न करता है व प्रदान करता है। सुखों की उत्पत्ति का वह ही करः, कर्ता= करने वाला है। शिव भिन्न है, शंकर भिन्न है यह बुद्धिभेद अज्ञान मात्र है, सत्यज्ञान पूर्ण तथ्य नहीं। शिवभक्त किसी भ्रम में न रहें।

ओम् पदवाच्य शिव, शंकर ईश्वर के इसी विशाल स्वरूप को जानने के लिये शिवरात्रि पर्व की फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी की रात गुजरात प्रान्त टंकारा गाँव के ज्ञानसूर्य महर्षि दयानन्द ने महत्वपूर्ण अध्यवसाय किया था। उस अध्यवसाय में उन्होंने शिवरात्रि पर्व पर व्रत क्या किया! सत्य ही खोज निकाला। उस सत्य का प्रकाश महर्षि दयानन्द ने नमः शम्भवाय० मन्त्र के अर्थो में निर्दिष्ट किया है।

नमः शम्भवय च० इस यजुः मन्त्र के अर्थ महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्यम्, आर्याभिविनयः, पञ्चमहायज्ञविधिः आदि स्थलों पर कियें हैं। महर्षि ने उन अर्थो में सर्वत्र परमात्मा के शिव, शंकर स्वरूपों के वैविध्य का निर्देश करते हुये सुख, कल्याण के गम्भीर तत्त्वों का संकेत किया है।

महर्षि द्वारा संकेतित मन्त्रार्थो के सुख, कल्याण के गम्भीर तत्त्व प्रत्येक शिव, शंकर के उपासक के लिये अति उपादेय हैं। उदाहरणतः पञ्चमहायज्ञविधिः में निर्दिष्ट महर्षि के गम्भीर भाव हैं -

नमः शम्भवाय च= जो सुखस्वरूप, मयोभवाय च= संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, नमः शंकराय च= कल्याण का कर्ता, मोक्षस्वरूप, धर्मयुक्त कामों को ही करने वाला, मयस्कराय च= अपने भक्तों को सुख का देने वाला और धर्म कामों में युक्त करने वाला, नमः शिवाय च शिवतराय च= अत्यन्त मंगलस्वरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष सुख देने हारा है, उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

इन उपर्युक्त वेदमन्त्र एवं महर्षि दयानन्द के मन्त्रार्थ से भली भाँति परिज्ञात है कि शिव, शंकर पद भी एक अद्वितीय सर्वव्यापक ईश्वर के ही नाम हैं, भिन्न भिन्न पदार्थो के नहीं। सर्वव्यापक, निराकार ब्रह्म आदि नाम स्वरूप वाला ईश्वर ही सबका उपास्य है। उसकी ही नित्य एवं शिवरात्रि पर्व पर उपासना की जाती है। वह ही शिव है, शिवतर है, शंकर है, शम्भव है, मयोभव है, मयस्कर है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के शिव, शंकर आदि स्वरूपों को प्रतिपादित कर जहाँ अध्यात्म के गम्भीर रहस्य का प्रकाश किया है, वहीं शिवरात्रि पर्व के परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया है कि शिवोपासक शिव, शंकर भिन्न हैं, इस भ्रमजाल को तोड़ें, और शिवरात्रि पर्व व्रत को सार्थक करें।

प्राचार्य - पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी-१०
सम्पर्क - आर्य कन्या गुरूकुल शिवगज्ज (राज०) ३०७०२७

यज्ञ का गीत

मंत्र - अयं यज्ञो परोन्ताः पृथिवीम्या-यजु०

टेक - मन मेरा मन्दिर, यज्ञ ही पूजा
यज्ञ से बढ़ कोई कर्म न दूजा
बोलो वैदिक धर्म, यज्ञ ही शुभ कर्म,
मन मेरे ईश महिमा के गुण गायेजा। टेक।

१क. दुर्गुण तज कर जब कोई मानव नित सत्संग में जायेगा,
काम क्रोध मध लोभ मोह तज जीवन भर सुख पायेगा।
प्रभु भक्ति को जब मन छूजा, यज्ञ से बढ़ ..... ।

२क. जिस मानव ने यज्ञ कर्म से सच्चे मन से प्रीति लगाई।
घृणा द्वेष ईर्षाया तज कर, काम क्रोध की करी सफाई।
मन उसका बन जा खरबूजा। यज्ञ से बढ़ .....२।।

३क. अनालसी बनकर के जिसने, पूरी विद्या शिक्षा पाई
ब्रह्ममुहूर्त में जगकर के दरिद्रता की करी सफाई।
धन पाकर के सब कुछ सूझा।। यज्ञ से बढ़ .....

४ - प्रातः सायं जिस मानव ने यज्ञ कर्म का दीप जलाया।
सामवेद का पावन रूचिकर मधुरगीत संगीत सुनाया।
जैसे ही मिश्री का कूंजा।। यज्ञ से बढ़ .....।।

५ - हे जगदीश्वर तू सर्वेश्वर मेरे सब दुर्गुण हर जायें
कड़क देव वेद कथा सुन, हम सब भव सागर तर जायें।
सुन कर मन की दुर्गुण धूजा। यज्ञ से बढ़ कर कर्म न दूजा।

कड़कदेवार्य कृतः
वेदार्थ शोध संस्थान
गनौरा नगली (स्थाना)
मो. ६४११८६१७६५

सूक्ष्म ईश्वर स्थूल न होने के कारण आंखों से दिखाई नहीं देता

मनमोहन कुमार आर्य,
देहरादून ।

संसार के अधिकांश लोग ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं और बहुत से ऐसे भी है जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। आंखों से दिखाई न देने के कारण वह ईश्वर की सत्ता से इनकार कर देते हैं। इन भाइयों को यह नहीं पता की सूक्ष्म पदार्थ आंखों से देखे नहीं जा सकते। क्या हम वायु और जल के एक अणु वा इसके दो तत्वों हाइड्रोजन व आक्सीजन के परमाणुओं को देख पाते हैं ?कोई भी वैज्ञानिक आंखों से न दिखने वाले परमाणुओं सहित वायु व अन्य सूक्ष्म पदार्थो के अस्तित्व से इनकार नहीं करता। यदि वैज्ञानिक आंखों से न दिखने वाले अनेक पदार्थो को मान सकते हैं तो फिर ईश्वर पर ही यह शर्त लगाना हमें अल्प बुद्धि वालों का ही कार्य प्रतीत होता है। हमने किसी अज्ञात व्यक्ति को एक पत्र लिखा और डाक से भेज दिया। पत्र पाने वाला हमें देख नहीं रहा है। हमें जानता भी नहीं है। परन्तु वह पत्र को पढ़कर हमें हमारे पते पर उसका उत्तर भेज देता है। उसे पत्र देखकर ही हमारी सत्ता का विश्वास हो जाता है। हमने पत्र भेजने वाले को नहीं देखा और न उसने हमें देखा परन्तु एक दूसरे की सत्ता को दोनों स्वीकार करते हुए आपस में पत्र व्यवहार करते हैं। यहां हमारा पत्र व उसमें लिखी बातें ही हमारे अस्तित्व के होने का प्रमाण है। इसे लक्षण प्रमाण कह सकते हैं। पत्र लक्षण है हमारे विद्यमान होने का। यदि हम न होते तो पत्र भेजा ही नहीं जा सकता था। इसी प्रकार संसार में भिन्न-भिन्न पदार्थो की रचना को देखकर इसके रचयिता का ज्ञान व प्रत्यक्ष होता है। सूर्य को देखकर इसको बनाने व धारण करने वाले का, इसी प्रकार से पृथिवी, पृथिवी पर विद्यमान सभी पदार्थ और समस्त जड़ व जंगम जगत एक ईश्वर के होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। स्वार्थी, अज्ञानी, मूर्ख, हठी, दुराग्रही व अविद्या से ग्रस्त लोग दूसरे मनुष्य के सत्य को भी असत्य ही ठहराते हैं और अपने असत्य को सत्य मान कर व्यवहार करते व दूसरों को भ्रमित कर उसमें फंसाने का काम करते हैं। यही स्थिति हमें ईश्वर को न मानने वालों में से अधिकांश शिक्षित लोगों की लगती है। उनके पास विवेक की कमी है और वह सब मिथ्या प्रचार के शिकार हैं।

आईये, विचार करते हैं कि यदि ईश्वर न होता तो क्या हमारे इस दृश्य संसार का अस्तित्व होता ?हम व वैज्ञानिक जानते हैं कि यह संसार जड़ पदार्थो के परमाणुओं से मिलकर बना है। भिन्न-भिन्न तत्वों के सूक्ष्म परमाणु मिलकर सूक्ष्म अणु बनाते हैं और उन अणुओं की घनीभूत अवस्था यह दृश्य पदार्थ होते हैं। अब प्रश्न यह है कि सृष्टि के उपादान कारण इन परमाणुओं और उन परमाणुओं से अणुओं को किसने बनाया ?किसको पता था कि इस सृष्टि में मनुष्य व अन्य प्राणी जन्म लेंगे, वह जल, वायु, अन्न, दूध, फल, मेवे आदि का सेवन कर जीवित रहेंगे, इसलिये उनके लिए आवश्यक सभी पदार्थ बनाने होंगे। यह सोचने व योजना बनाने का काम जड़ पदार्थ कदापि नहीं कर सकते। यह कार्य केवल चेतन पदार्थ वा सत्ता द्वारा ही सम्भव होता है। ''ज्ञान'' जड़ पदार्थो का गुण नहीं है। जड़ता और चेतन गुण परस्पर विरोधी होते हैं। दोनों भिन्न भिन्न पदार्थ है। यह एक दूसरे से नहीं बनते अपितु जड़ पदार्थो का कारण सत्व, रज व तम गुणों वाली सूक्ष्म प्रकृति है। चेतन पदार्थो में आने वाले जीवात्मा और ईश्वर अनादि, अजन्मा व नित्य पदार्थ हैं। ईश्वर व जीवात्मा चेतन पदार्थ होने के कारण ही इनमें ज्ञान होता है। ईश्वर अनादि, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकर, सर्वव्यापक और सच्चिदानन्द स्वरूप है। अनादि होने से उसने एक बार नहीं, सौ व हजार बार नहीं अपितु अनन्त बार इसी प्रकार की सृष्टि को बनाया व धारण कर संचालन किया है। यदि वह न बनाता तो यह हमारी सृष्टि न बनती। प्रलय अवस्था अर्थात् ब्रह्म रात्रि में ईश्वर इस सम्पूर्ण सृष्टि को ४.३२ अरब वर्षो तक नहीं बनाता है तो यह नहीं बनती। परमाणुओं की पूर्व अवस्था सत्व, रज व तम अवस्था में यह प्रकृति सूर्य न होने के कारण घोर अन्धकार में रहती है।

उसके बाद ईश्वर इस सृष्टि को बनाता है तो बन जाती है। अब बनाई है तो इसकी आयु ४.३२ अरब वर्ष पूर्ण होने पर यह प्रलय को प्राप्त होगी। प्रलयवस्था का समय पूरा होने पर ईश्वर इसे अपनी शाश्वत व सनातन सन्तान वा प्रजा जीवात्माओं के लिए पुनः बनायेगा। इसी प्रकार उसने इससे पूर्व भी ऐसी ही सृष्टि को अनन्त बार बनाया है। यह सृष्टि चक्र इसी प्रकार से चलता आ रहा है। इसमें शंका व भ्रान्ति अज्ञानियों व अविद्या से ग्रस्त लोगों को होती है। इस दृष्टि से हमारे जो वैज्ञानिक इस वैदिक सत्य सिद्धान्त को नहीं मानते उनके बार में भी यह मानना बड़ता है कि वह इस विषय में, अन्य विषयों में नहीं, अविद्या अर्थात् मिथ्या ज्ञान से ग्रस्त हैं। अतः यह विज्ञान का सिद्धान्त है कि कोई भी रचना तभी होती है जब कोई चेतन सत्ता ईश्वर व मनुष्य उसकी रचना करे। यदि वह नहीं करेंगे तो प्रयोजनवान रचना का अस्तित्व सम्भव नहीं है। अपने आप बिना कर्ता व रचयिता के कोई पदार्थ कदापि नहीं बनता है। इसको अधिक विस्तार से जानने के लिए वेद व दर्शन ग्रन्थों मुख्यतः सांख्य, वैशेषिक, योग, न्याय आदि को देखना व पढ़ना चाहिये। इससे सभी भ्रान्तियां दूर हो जाती है।

वेद और वैदिक धर्म को छोड़कर सभी मत-मतान्तर सम्प्रदाय-धर्म विज्ञान से प्रायः शून्य हैं। यूरोप के जिन देशों में हमारे सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक उत्पन्न हुए, वहां के धर्म व मतों में विज्ञान के विपरीत अन्य सिद्धान्त पाये जाते थे। इस कारण उन्होंने धर्म को विज्ञानहीन व विज्ञान का विरोधी मान लिया और आज तक मानते आ रहे हैं जबकि वेदों में यह बात नहीं है। वेद कहते ही ज्ञान को हैं और वेद पूर्ण ज्ञान व विज्ञान सम्मत हैं। हमारा अनुमान और विश्वास है कि यदि यूरोप के सभी विद्वान भारत में उत्पन्न होते, वेद और वेदिक साहित्य को पढ़ते तो वह एक स्वर से ईश्वर व जीवात्मा के अस्तित्व को अवव्य स्वीकार करते।

यदि आज भी संसार के सभी वैज्ञानिक वेदों व वैदिक साहित्य का सत्य स्वरूप जान लें तो वह अवश्य ही ईश्वर व जीवात्मा विषयक भ्रान्तियों से मुक्त हो सकते हैं।

ईश्वर दिखाई नहीं देता, इसका एक कारण यह भी है कि ईश्वर हमसे बहुत दूर, अतिदूर है और निकट से निरटतम भी है। सूर्य पृथिवी से १३ लाख गुणा बड़ा बताया जाता है परन्तु आकाश में यह एक गेद फुटबाल के समान दिखाई देता है। इसका कारण पृथिवी और सूर्य के बीच की दूरी संबंधी विज्ञान के नियम हैं। ईश्वर सूर्य में व्यापक होने से विद्यमान है व उससे भी कहीं अधिक दूर होने से भी आंखों से दिखाई नहीं देती। हमारी आंख में यदि कोई तिनका पड़ जाये तो भी वह अति निकट होने के कारण दिखाई नहीं देता। उसे आंख से निकाल कर हाथ पर रखकर देख सकते हैं। अतः आंखों में भी समाये होने के कारण ईश्वर हमें दिखाई नहीं देता। आंखों के अन्धे हमारे भाईयों को भी संसार की सभी वस्तुयें होने पर भी दिखाई नहीं देती। दिखाई देने के लिए आंखों का निर्विकार होना भी आवश्यक है। अतः यदि अन्धा व्यक्ति यह कहे कि मुझे संसार दिखाई नहीं देता, अतः यह है ही नहीं, ऐसा ही तर्क उन लोगों का है जो कहते हैं कि ईश्वर दिखाई न देने से नहीं है। फिर ईश्वर का अनुभव व ज्ञान कैसे हो ? ईश्वर का ज्ञान किस प्रकार हो इसके लिए हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू आदि अनेक भारतीय व विदेशी भाषाओं में उपलब्ध सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को पढ़कर जाना व अनुभव किया जा सकता। योगदर्शन जीवात्मा को परमात्मा वा ईश्वर के साथ जोड़ने की विद्या का ग्रन्थ है। इसे पढ़कर समझ कर व अभ्यास कर ईश्वर का प्रत्यक्ष किया जा सकता है। वेदों का अध्ययन कर ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को जानकर उसे आंखे बन्द कर अपनी आत्मा में खोजने पर वह ईश्वर की कृपा होने पर यथासमय साक्षात् जाना जा सकता है। इसे ईश्वर-साक्षात्कार कहा जात है। महर्षि दयानन्द व अनेक योगियों ने ईश्वर का साक्षात्कार किया था। आज भी देश में ईश्वर साक्षात्कार किये हुए योगी हो सकते हैं। साक्षात्कार के साधक तो हजारों व लाखों में है जिनके अपने-अपने आश्चर्यजनक अनुभव होते हैं। प्राचीनकाल में हमारे सभी ऋषि-मुनि ईश्वर का साक्षात्कार किये हुए होते थे जिन्हें आप्त पुरुष कहा जाता था। महर्षि दयानन्द ने सन्ध्योपासना की विधि लिखी है। इसे पढ़कर व समझकर साधनाभ्यास करने से भी ईश्वर को जाना व प्रत्यक्ष किया जा सकता है। ईश्वर का वेद वर्णित संक्षिप्त स्वरूप लिखकर हम इस लेख को विराम देते हैं। वेदों के अनुसार ईश्वर कि जिसके ब्रह्म, परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्ता, धर्ता, हर्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है, उसी को परमेश्वर कहते हैं।

ईश्वर के इसी स्वरूप को सभी धार्मिक बन्धुओं को मानना चाहिये। इससे भिन्न स्वरूप को मानने वाले लोग वस्तुत मिथ्या ज्ञान से ग्रस्त हैं सत्य को ग्रहण करना और असत्य का त्याग करना मनुष्य का मुख्य धर्म है। जो ऐसा नहीं करता यह धार्मिक नन्हीं पाखण्डी ही कहा जा सकता है।

●●●

वासुदेव आर्य का निधन

बाराबंकी जनपद के ग्राम डेढ़वा निवासी वासुदेव आर्य ढोलक वादक का देहान्त हृदय गति रूक जाने से हो गया आप भारत के कई प्रान्तों के आर्य समाजों की उत्सवों में भजनोपदेशक के साथ ढोलक के साथ संगत दिया। बाराबंकी आर्य समाज के पदाधिकारियों ने उनके आकस्मिक निधन पर दुःख प्रकट करते हुये आत्मा की शान्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। यह दुखद घटना ७ फरवरी, २०१६ को डॉ. आर.एन. गुप्ता के द्वारा आर्य मित्र कार्यालय में प्राप्त हुई।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा शामली के तत्वावधान में

(दिनांक 28 फरवरी 2016 को) आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर धीमानपुरा शामली (उ0 प्र0) जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन दि0 28 फरवरी 2016 को आयोजित किया गया।

जिसमे मुख्य अतिथि - **देवेन्द्र पाल वर्मा जी प्रधान** (आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र.)

तथा विशिष्ठ अतिथि - **श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मन्त्री** (आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र.)

विशिष्ठ अतिथि - **श्री अरविन्द जी आर्य उपाध्यक्ष** (आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र.)

विशिष्ठ अतिथि - **डा. धीरज सिंह आर्य जी कोषाध्यक्ष** (आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र.)

विशिष्ठ अतिथि - **श्री मास्टर राजकुमार सिंह** (अमोली सहारनपुर)

कार्यक्रम में प्रातः 8.00 बजे से यज्ञ-भजन व प्रवचन होगे तथा दोपहर 2.00 बजे से वैहिक कृषिगोष्ठी आदि कार्यक्रम हुये।

सम्पर्क सूत्र 9412842323, 9837569352

महिला आर्य समाज एवं आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर का 86 वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महिला आर्य समाज एवं समाज (वेद मन्दिर) 13 ब्लाक, गोविन्द नगर कानपुर नगर का 86वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 12 फरवरी से 14 फरवरी 2016 बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया।

वार्षिकोत्सव कार्यक्रम मे आचार्य पं0 सुखदेव "आर्य तपस्वी, दिल्ली, पं0 कुलदीप आर्य बिजनौर पं0 मोहित शास्त्री बिजनौर आदि के प्रवचन एवं भजन हुए

कार्यक्रम में प्रातः 8.00 बजे से 11.00 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन तथा सायं 6.00 बजे से रात्रि 9.00 बजे तक प्रवचन भजन आदि हुए जिसमें काफी संख्या में आर्य नर-नारियों ने शामिल होकर उत्सव को सफल बनाया।

वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा वेदवेदांग ज्योतिष सम्मेलन दिनांक –26. 27 मार्च 2016

वौदिक मिशन मुम्बई के द्वारा ज्योतिष सम्मेलन आर्य समाज सांताक्रूज मुम्बई मे आयोजन किया जा रहा है जिसमें विद्वानों द्वारा ग्रह उपग्रह नक्षत्र लग्न मुहुर्त जन्मकुण्डली शुभ-अशुभ गणित और फलित ज्यातिष आदि विभिन्न विषयो पर गहन चिन्तन किया जायेगा।

सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी होंगें

अध्यक्ष सम्पर्क सूत्र डा0 सोमदेव शास्त्री - 09869668130

मन्त्री संदीप आर्य - 9969037837

शुभ आशीर्वाद

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हापुड़ के उप मंत्री एवं आर्य समाज खैया दतियाना के प्रधान जितेन्द्र सिंह आर्य की सुपुत्री सौ. स्वाति आर्या का शुभ विवाह गौरव आर्य दक्षुपुर के साथ 15.2.16 को सम्पन्न हुआ संस्कार पर सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी विश्वानन्द सरस्वती, जिला पंचायत चेयरमैन सत्यपाल यादव, प्रि. सुरेश नागर समाजसेवी, चौ. सत्यवीर सिंह भा.कि.यू. राष्ट्रीय सचिव, आचार्य ऋषभ द्विवेदी दिल्ली, जितेन्द्र चिकारा आचार्य लोकेन्द्र, स्वामी अखिलानन्द सरस्वती आदि ने अपना शुभ आशीर्वाद प्रदान किया वैदिक रीति से सम्पन्न संस्कार से सभी प्रभावित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की ओर से शुभाशीष।

बहादुरगढ़ क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन

20-21 फरवरी, 2016 को आर्य समाज पसवाड़ा गढ़ हापुड़ द्वारा क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें री सत्यपाल यादव जिला पंचायत अध्यक्ष हापुड़, मा. मदन चौहान राज्य मंत्री उ.प्र. सरकार धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री, चौ. सत्यवीर सिंह राष्ट्रीय सचिव भा.कि.यू. के अलावा कई विद्वान भजनोपदेशकों ने भाग लिया। जिला सभा हापुड़, गाजियाबाद एवं बुलन्द शहर ने भी भाग लियां विकास कार्य, ज्ञानेन्द्र चो. ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य अखिलानन्द सरस्वती के अतिरिक्त प्रमोद आचार्य, नरेन्द्र रस्तोगी, मन्जू चौ. प्रिंसिपल डी.एम.एस.पी. गढ़ माता सुदेश माता निर्मला महिला सम्मेलन में उपस्थित रहीं क्षेत्र से सभी समाजों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया संयोजक धर्मपाल सिंह, धर्मवीर सिंह, उदय भान एवं रणजीत सिंह हरिपाल आर्य आदि प्रमुख रहे।

-अमरपाल सिंह आर्य, संयोजक

अधिष्ठाता प्रकाशवीर शास्त्री, भवन ब्रजघाट

शोक सम्वेदना

अनुज पाण्डेय सुपुत्र श्री हरिशंकर पाण्डेय को राजाजी पुरम् निवासी को गोलीमार दी गयी जिनसे उनका निधन हो गया। उनकी आयु 31 वर्ष की थी वे आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के कार्यकर्ता श्री आशुतोष सिंह के मित्र व पड़ोसी थे।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा को सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनः शन्ति व धैर्य प्रदान करें।

-सम्पादक

ऋषि बोध एवं वेद प्रचार पर्व

आर्य समाज, अचल ताल, अलीगढ़

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल ताल) अलीगढ़ द्वारा ऋषि बोध एवं वेद प्रचार पर्व दि. 03 मार्च से 06 मार्च, 2016 तक उल्लास पूर्वक मनाया जायेगां इस महान अवसर पर श्री बच्चू सिंह विदुषी कविता आर्या एवं सविता शास्त्री, स्वाती श्रद्धानन्द श्री नौबतराम वानप्रस्थी, पं. रणजीत शास्त्री, पं. राजवीर वेद मुनि आदि विद्वानों को बुलाया गया है।

कार्यक्रम में प्रातः 7:30 बजे से 10:30 बजे तक हवन, प्रवचन आदि तथा सायं 6:30 से रात्रि 9:30 बजे तक प्रवचन भजन आदि होंगे। प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक प्रतिदिन प्रभात फेरी तथा दि. 7 मार्च, 2016 को ऋषि बोधोत्सव पर विशाल शोभा यात्रा प्रातः 10:00 बजे नगर के विभिनन मार्गों से निकाली जायेगी। उसकी समाप्ति पर ऋषि लंगर का आयोजन है। सभी आर्य जनों से प्रार्थना है कि उत्सव में पहुंच कर सफल बनायें।

मंत्री

आर्य समाज अलीगढ

गुरूकुल आश्रम आमसेना का 49 वाँ वार्षिक महोत्सव सानन्द सम्पन्न।

आर्ष पाठविधि का प्रमुख शिक्षण केन्द्र आर्यो का तीर्थस्थल उडीशा में गुरूकुल आश्रम आमसेना 49वाँ वार्षिक महोत्सव 6,7,8 फरवरी 2016 को आर्य जगत के तपस्वी कर्मठ सन्यासी पुज्य सन्यासी पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (संचालक गुरूकुल आश्रम आमसेना) की नेतृत्व में सम्पत्र हुआ।

इस अवसर पर आर्य जनों को सम्बोधित करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी एवं अनेक गुरूकुलों के संस्थापक पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी एवं आर्य जगत क वैदिक विद्वान पूज्य स्वामी सोम्यानन्द जी आदि पधारे थे। इस अवसर पर हरियाणा के तपस्वी अपदेशक चौ. शीशराम आर्य की पूज्य स्मृति में महायज्ञ एवं आर्य जगज के भामाशाह स्वार्गीय श्री चौ. मित्रसेन जी आर्य की पुण्य समृति में वेदिक विदुषी प्रियंम्बदा वेदभारती (विजनौर) कण्वाश्रम के आचार्य आधुनिक भीम श्री विश्रपाल जी जयंत, उडीशा के प्रसिद्ध विदुषी श्रीमती शत्रोदेवी का अभिनन्दन किया गया।

इस प्रकार त्रीदिवसीय समारोह सम्पत्र हुआ। इस अवसर पर खरियार रोड नगर में विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

आचार्य मनुदेव वागमी,प्रबन्धक

गुरूकुल आश्रम आमसेना

प्रवेश प्रारम्भ

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा संस्थापित वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ गुजराज के 'संस्कृत व्याकरण, उपनिषद् एवं दर्शन अध्यापन केन्द्र' में ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जा रहा है। यहाँ पिछले तीन वर्षो से अष्टाध्यायी,प्रथमावृत्ति, काशिका, महाभाष्य आदि संस्कृत व्याकरण के ग्रन्थो को तथा दर्शनों व उपनिषदों का अध्ययन-अध्यापन चल रहा है। इसके साथ प्रतिदिन सन्ध्या, हवन, आत्मनिरीक्षण व समय-समय पर अनेक विद्वानों के दार्शनिक-आध्यात्मिक प्रवचन एवं योगनिष्ट गरूवर्य पूज्य स्वामी सत्यपति जी का सान्निध्य प्रेदणा व उपदेश भी प्राप्त होता रहता है। आश्रम फल फूल, वृक्षों से युक्त रमणीय वातावरण से परिपूर्ण शान्त एकान्त स्थान में स्थित है। आवास, भोजन, वस्त्र पुस्तक आदि समस्त पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते है। प्रवेश के लिए न्यूनतम अवस्था 18 वप्र है। कुछ काल के लिए ब्रह्मचारियों का परीक्षण किया जाता है। गुरूकुलीय दिनचर्या, पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व अध्यात्म में रूचि रखने वाले ब्र....चारी ही प्रवेश के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें। स्थान सीमित है।

-: व्यवस्थापकः-

संस्कृत व्याकरण, उपनिषद् एवं दर्शन अध्यापन केन्द्र

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्य, रोजड़, पो. सागपुर, जि.साबरकांठा, गुजरात-383307

(02770)287417, 291555, 9427059550

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

पृष्ठ.....१ का शेष

जिनमें होते हैं। वही मनुष्य होते हैं। शास्त्रों का कथन है - मर्नुमवः अर्थात हम मनुष्य बनें। लेकिन हम मनुष्य न बनकर पशु बन रहे हैं। हम पशुओं की तरह भोगों में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। जबकि ऐसा नहीं करना चाहिए।

आचार्य जी का कहना था कि हम लोग ऋषि मुनियों के बताये हुये पदचिह्नों पर चलें। तभी हमारा कल्याण संभव है। वेदों के पथ पर चलते हुये प्रतिदिन सुबह शाम कम से कम दो तीन घंटे ईश चिन्तन करता है। वह मनुष्य नहीं देवता माना जाता है। इस गुणों से मुक्त आचार्य बलदेव जी थे इसलिये वह मनुष्य नहीं देवता थे।

आचार्य बलदेव जी असाधारण प्रतिभा के व्यक्तित्व थे। उनका समपूर्ण जीवन त्यागमय था। आर्य समाज उनके लिये प्राण था। आर्य समाज के प्रचार प्रसार में उनहोंने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ऐसे महान् व्यक्तित्व संसार में कभी कभी आते है। वह वेदों, प्राचीन व्याकरण, महाभाष्य दर्शनों निरूक्त आदि अनेक शास्त्रों के अच्छे विद्वान थे। वह निर्भीकता के पुजारी थे। उन्होंने गौ रक्षा आंदोलन में सरकार को भी झुका दिया। ऐसे महान् विभूति को हम कभी नही भूल सकते।

६. वह बहुत निर्भीक थे वह सत्य के लिये हमेशा अडिग रहते थे। सत्य की रक्षा के लिए हमेशा मर मिटने को तैयार रहते थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के विरूद्ध आवाज उठाने वालो सतलोक आश्रम करौंथा रोहतक के कबीर पंथी महाराज रामपाल को घूस चटा दी। इससे सिद्ध होता है कि आचार्य जी बहुत निर्भीक थे। वास्तव में जो लोग आचार्य जी के मार्ग को अपनायेंगे। उनका जीवन महान बन जायेगा।

उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी का अहित नहीं चाहा। सबकी भलाई की सबका उपकार किया और रूपयों पैसों एवं अन्नों से गरीबों की मदद भी किया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश सेवा, आर्य समाज की सेवा, धर्म सेवा, एवं परोपकार में लगा दिया। उन्होंने गौरक्षा आंदोलन संस्कृत एवं संस्कृति बचाओं, आंदोलन भी किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने बाल विवाह छुआछूत, जाति प्रथा एवं स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। बाल विवाह छूआछूत एवं जाति प्रथा को उन्होंने वेद विरूद्ध बताया। आचार्य जी ने कहा कि स्त्रियों को भी वेद शास्त्र पढ़ने का अधिकार है, जैसा कि शास्त्रों गार्गी जैसी विदुषी का प्रमाण भी मिलता है। आचार्य जी एक धर्मोद्धारक परोपकारी, न्यायप्रिय, सत्यवादी, स्वमी दयानन्द के अनन्य भक्त समाजसेवी, राष्ट्र भक्त धर्म भक्त एवं कर्मयोगी संत थे ऐसे महा मानव को मेरा शत शत प्रणाम है। लेखक कविता के माध्यम से प्रस्तुत करता है -

जब तक सूरज चांद रहेगा। बलदेव जी का नाम रहेगा।।
उनको कभी नहीं भूलेंगे। सारा जग उन्हें याद करेगा।।
वेदों के पथ पर चलना। उनका नित्य काम था।
बलदेव जी का दुनियाँ में, बहुत बड़ा नाम था।।
ज्ञान की गंगा दिल में बहाई। वेदों की ज्योति जग में जलाई।।
श्री बलदेव जी ज्ञान परोपकारी थे। ब्रह्मचारी और सदाचारी थे।।
स्वामी दयान्नद के सच्चे भक्त थे। गौ-भक्त राष्ट्रवादी और ईश-भक्त थे।।
व्याकरण के सूर्य और विद्वान थे। समाज सुधारक और इन्सान थे।।
आचार्य बलदेव जी को मेरा प्रणाम है। आज उनका भुवन में बड़ा नाम है।।
उन्होंने वेदों के पथ पर चलना सिखाया। संध्या और हवन करना बताया।।

आचार्य बलदेव जी एक कर्मयोगी संत थे। कर्म करना ही मनुष्य का असत्यी जीवन है। जो मनुष्य कर्म करने से डरता है। वह मनुष्य अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता।

वेदमंत्र स्पष्ट करता है -

कुर्वन्नवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरें।।

यह मंत्र स्पष्ट करता है कि मनुष्य को शुभकर्म करता हुआ सौ वर्षो तक जीने की इच्छा रखनी चाहिये। जो मनुष्य अपने जीवन शुभ कर्म करता है। उसका परिणाम सदा शुभ ही होता है। कर्म करने वाला मनुष्य ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है। जो मनुष्य केवल भाग्य भरोसे रहता है और कर्म करना नही चाहता है। वह अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता। ऐसे मनुष्य का जीवन हमेशा कुन्दन करता रहता है। मनुष्य जीवन में कर्म ही सब कुछ है। कर्म करने वाला व्यक्ति ही आगे बढ़ता है। आचार्य बलदेव जी का भी यह कथन था कि हे मनुष्य। तुम केवल कर्म करो और फल की चिन्ता मत करो। जो मनुष्य जैसा कर्म करता है परमात्मा उसे वैसा ही फल देता है।

८. दिनांक २८ जनवरी २०१६ ई० को दयानन्द मठ रोहतक में लगभग ६ बजे सुबह अकस्मात् उनकी मृत्यु हो गई। उनके निधन का समाचार सुनते ही सम्पूर्ण आर्य जगत स्तब्ध रहे गया। आचार्य बलदेव जी के जाने से आर्य जगत को जो झटका लगा। अर्थात आर्य जगत को जो क्षति हुई। उनकी पूर्ति होना असंभव है। आचार्य जी ने आर्य समाज के हितार्थ जो कार्य किया। उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे महान् आत्मा को मेरा शत-शत नमन है।

लेखक-डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री सोम

पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन अयोध्या के कतिपय चित्र

सेवा में,

.....

.....

.....

"सत्यात्मा दयानन्द"

कभी जब मैं भी हरा-भरा था,
फल फूल सुगंध से, था भरपूर।
आज मेरा, जीवन बदला, चोला बदला,
जो कहते ये हैं अपने, हो गए हैं दूर।।
वृक्ष उगता है इन्सान,
होना है बूढ़ा जीवन अंजाम,
वक्त से कर ले बस समझौता,
सभ्य जनों की है पहचान,
अश्रु नेत्र से बहा न प्यारे,
सत्य यही, है जीवन दस्तूर
आज मेरी----------।।
जो तेरे बिना थे नहिं कदम बढ़ाते
अब सक्षम हो गए तुझे क्यों पूछे,
दम्भ में हो गए है वे अंधे
अब लगे वही हो गए दूजे,
सत्य यही जीवन का शायद
समझ ले सागर यह जग दस्तुर।
आज मेरा.....।।
दयानन्द जिस सत्य राह चले थे
साथ मे उनके सत्य वाले चले थे,
सोच आज वे कितने भले थे,
वे सत्य सहे नहि कभी डिगे थे,
सागर बूढ़ा हो ना, सत्यानुभव द्योतक
वसे आगे चला चल, देख दया नन्दी नूर।
आज मेरा.....।।

रचयिता -डा. बी.पी. सागर
अंतरंग सदास्य
आ.प्र.सभा, उ.प्र.
मंत्री, आर्य समाज रानीमंडी अतरसुइया
इलाहाबाद

शोक श्रद्धांजलि

आर्य समाज शहबाजपुर जयतोली जि० अमरोहा के प्रधान एवं क्षेत्रीय आर्य समाजो के प्रधान गरूकुल की आदर्श गौशाला के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डा0 मुख्त्यार सिंह आर्य का निधन हो गया ने परोपकारी सच्चे आर्य थे गरूकुल के लिए सदैव पुरूषार्थी रहे। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मन्त्री ने गरूकुल पूठ मे शोक सभा कर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा परिवार के लिए धैर्य धारण करने की शक्ति प्रभु प्रदान करें।

आर्य समाज सूरजपुर - ग्रेटर नोएड़ा के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित एवं जिला आर्य प्रतिनिधिसभा गौतमबुद्ध नगर के महामन्त्री आचार्य जनमेजय शास्त्री का अचानक निधन हो गया गुरूकुल पूठ परिसर मे शोक छा गया उत्साही कर्मठ मिश्नरी भावना से समर्पित योग्य स्नातक आर्य समाज के लिए अपूरणीय क्षति है जिला सभा की सक्रियता में उसका योगदान सदैव याद किया जायेगा। शोक सभा में सभी ने परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की है आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की ओर से सभा प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा, सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरा नन्द सरस्वती एवं सभा कोषाध्यक्ष डॉ. धीरज सिंह एवं आर्य मित्र परिवार ने भी सामूहिक रूप से शेक व्यक्त कर परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रभु प्रदान करें।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।